

(i) **Linear Programme Instruction: - 1954 ई०**
[रेखीय (खंडली) अभिक्रमित अनुदेशन]

इसका जन्म मनोवैज्ञानिकों द्वारा प्रयोगशाला में शोध कार्य द्वारा किया गया। शिक्षा शास्त्र में इस आधुनिक सिद्धांत की बोज मनो-
 -वैज्ञानिकों द्वारा की गयी, जिसमें सर्वाधिक ध्येय डारवर्ड विश्व-
 -विद्यालय के प्रो० B.F. Skinner को जाता है। रेखीय अभिक्रमित
 अनुदेशन स्किनर के सक्रिय अनुबंध अनुक्रिया सिद्धांत पर आधारित

इस सिद्धांत का उपयोग करके स्किनर ने सक्रिय अनुबंध अनुक्रिया
 शिक्षण प्रतिमान का विकास किया। जिसका मुख्य लक्ष्य व्यवहार
 परिवर्तन है।

स्किनर ने इस शिक्षण प्रतिमान के तत्वों का प्रयोग
 अभिक्रमित अनुदेशन में किया तथा इसके आधार 1954 में रेखीय
 अभिक्रमित अनुदेशन की खोज की।

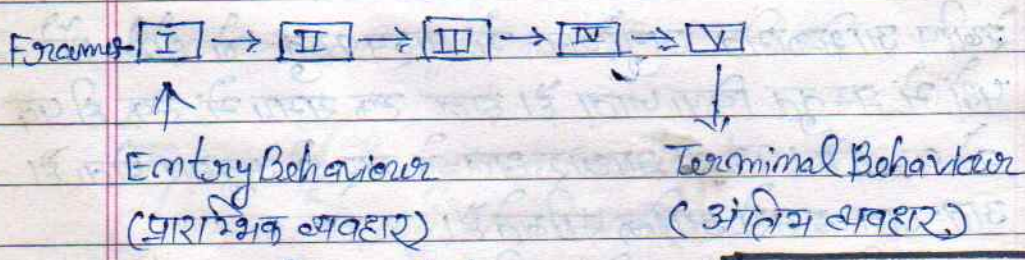
Assumption of Linear Programme Instruction: -
[रेखीय अभिक्रमित अनुदेशन की मान्यताएं]

1. रेखीय अभिक्रमित अनुदेशन में पाठ्यवस्तु को छोटे-छोटे
 पदों में प्रस्तुत किया जाता है। क्षत एक समय में एक ही पद
 को पढ़ता है। पद का आधार क्षत के उत्तर के अनुसार होता है।
 अतः क्षत इससे अधिक सीखता है।
2. क्षत सक्रिय रहकर अधिक सीखता है।
3. छात्रों की सही अनुक्रियाओं अथवा व्यवहारों को प्रोत्साहित करने तथा
 गलत अनुक्रियाओं को छोड़ देने से वे अधिक सीखते हैं।
4. पाठ्यवस्तु की कमबहु व्यवस्था छात्रों के अनुरूप होने
 पर अधिगम अधिक होता है।
5. अध्यापन के समय क्षत कम से कम दुरि करने पर अधिक
 सीखता है।

6. पूर्व ज्ञान का नवीन ज्ञान से सम्बन्ध स्थापित करने हेतु प्रस्तावना पदों में अनुबोधक प्रयुक्त किये जाते हैं। इसकी निर्माण विधि में दालों के पूर्व व्यवहार का आकलन पहले किया जाता है।
7. दालों को उनकी गति तथा क्षमता के अनुकूल सम्पत्ती स्वतंत्रता देने से दाल अधिक सीखते हैं।

Structure of Linear Programme Instruction [रेखीय अनुदेशन का स्वरूप]

रेखीय अभिक्रमित अनुदेशन में प्रत्येक पद द्वारा दाल को नवीन ज्ञान प्रदान करने हेतु पाठ्य वस्तु को छोटे-2 पदों में क्रमबद्ध रूप से प्रस्तुत किया जाता है। प्रत्येक पद पर दाल सही अनुक्रिया करता है, जिनका सम्बन्ध अंतिम व्यवहार से होता है। दाल एक समय में जितना पढ़ता है, उसे पद (Frame) कहते हैं। सभी पदों में परस्पर बढ़ते हुए क्रम के सम्बन्ध होता है।



← Path of Learning → रेखीय अभिक्रमित अनुदेशन में पदों का आकार होता होता है, जिनमें कुछ शब्द अथवा एक या दो वाक्य होते हैं।

- (i) Stimulus
- (ii) Response
- (iii) Reinforcement

(i) **Stimulus** :- रेखीय अधिकृत अनुदेशन की प्रक्रिया को उद्दीपन अनुक्रिया के रूप में व्याख्या की जाती है। इसमें वातावरण तथा परिस्थिति को प्रधानता दी जाती है। उद्दीपन पाठ्यवस्तु के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। इसे स्वतंत्र चर भी कहते हैं।

(ii) **Response** :- छात्र को उद्दीपन के आधार पर आपेक्षित अनुक्रिया करनी होती है, जिसे आश्रित चर कहते हैं। अनुक्रिया, उद्दीपन पर आधारित होती है। तथा सही अनुक्रिया करने से छात्र को नवीन ज्ञान प्राप्त होता है। रेखीय अनुक्रियाओं की निम्नलिखित विशेषताएं होती हैं।

- छात्र को नवीन ज्ञान प्राप्त होता है।
 - अनुक्रिया का सम्बन्ध अंतिम व्यवहार से होता है।
 - सही अनुक्रिया छात्र को पुनर्वर्तन प्रदान करती है।
- ⇒ अनुक्रिया का सम्बन्ध अंतिम व्यवहार से होता है।

Types of Linear Programme Instruction :-

1. **Constructive Response** :- प्रत्येक पद के लिए जब छात्र को अपनी अनुक्रिया लिखनी पड़ती है, तो इसे **Constructive Response** कहते हैं। यह अनुक्रिया छात्र के लिए एक नया व्यवहार होता है।

2. **Disjunctive Response** [विभेदीकृत अनुक्रिया] :-

कुछ पदों में अनुक्रिया के लिए दो या तीन विकल्प दिये जाते हैं या विकल्पों की व्यवस्था होती है। उन विकल्पों में से एक सही अनुक्रिया होती है। पदों को पढ़ते समय जब छात्र विकल्पों में से सही अनुक्रिया का चयन करता है, तो इसे विभेदीकृत अनुक्रिया कहते हैं।

B. Reinforcement :- पुनर्वर्तन से दाल उद्दीपन अनुक्रिया के मध्य सम्बन्ध स्थापित करता है। सही अनुक्रिया प्राप्त होने पर दाल को प्रसन्नता प्राप्त होती है तथा अकेले पढ़ने के लिए पुनर्वर्तन मिलता है। सही अनुक्रिया मया ज्ञान प्रदान करती है। इसे पुष्टिकरण की संज्ञा दी जाती है।

निष्कर्ष :- शैलीय अधिकृत आदेश में पदों के इस स्वरूप से दालों में आपेक्षित व्यवहार परिवर्तन लाया जाता है, जो इस अनुक्रिया का प्रमुख लक्ष्य है। अनुक्रिया सामग्री में उद्दीपन अनुक्रिया को ध्यान से बढ़ाया जाता है, तथा पदों की व्यवस्था इस प्रकार की जाती है कि एक पद की अनुक्रिया, अगले पद के लिए उद्दीपन का कार्य करती है। आदेश पर स्वतंत्र-पर का कार्य करने लगता है।

Importance of Linear Programme Instruction

1. एक सभ्य पथ
2. एक शैलीय मार्ग
3. उद्बोधों का प्रयोग
4. निर्धारित अनुक्रिया
5. दाल की त्रुटियों की सम्भावना बहुत कम
6. स्वअध्ययन
7. अध्यापक सिद्धांतों पर आधारित
8. पाठ्यवस्तु को स्पष्ट करने की क्षमता
9. पुनर्वर्तन
10. पुष्टपोषण

प्राचार्य
 मीरा नेमोरियल महाविद्यालय
 शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
 पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया